


उलटी पड़ी ट्रंप की टैरिफ रणनीति?

अमेरिकी राष्ट्रपति को अब शायद यह बात समझ आने लगी है कि उनकी रणनीति बहुत कारगर साबित नहीं होने वाली। शायद इसीलिए अब बातचीत की संभावना भी खोजी जाने लगी है। सत्ता की बागडोर संभालते ही जिस तरह उन्होंने दुनिया के तमाम देशों को पहले धमकाया और फिर पारस्परिक शुल्क लगा दिया, उससे उन्हें शायद यकीन था कि सारे देश उनके आगे घुटने टेक देंगे और अमेरिका की अर्थव्यवस्था कुलाचे भरनी शुरू कर देगी। मगर पारस्परिक शुल्क लगाने के साथ ही दुनिया भर में उनका विरोध शुरू हो गया। बाजार नीचे की तरफ लुढ़कने शुरू हो गए।

खुद अमेरिका में ट्रंप को अभूतपूर्व विरोध का सामना करना पड़ा। ऐसे में, उन्होंने अपनी शुल्क नीति पर विचार करना पड़ा। कुछ देशों पर उन्होंने नब्बे दिनों के लिए अपनी शुल्क नीति पर रोक लगा दी। हालाँकि चीन के साथ उनका शुल्क युद्ध रोज एक नया मोड़ लेता दिख रहा है। अब चीन ने भी अमेरिका पर सवा सौ फीसद का जवाबी शुल्क लगा दिया है। फिर भी अमेरिका को लगता है कि चीन जल्दी ही घुटने टेक देगा और वह ट्रंप से बातचीत की मेज पर आएगा। पर चीन ने दूसरे देशों की अमेरिका के खिलाफ अपने पक्ष में एकजुट करना शुरू कर दिया है। डोनाल्ड ट्रंप की पारस्परिक शुल्क नीति से

सबसे अधिक नुकसान खुद अमेरिका को होता नजर आ रहा है। चीन ने दूसरे देशों को कुछ रियायत के साथ अपने उत्पाद बेचने की पेशकश शुरू कर दी है। उसके बाजार पर बहुत प्रतिकूल असर नजर नहीं आ रहा। चीन का निर्यात प्रभावित होने से अमेरिकी बाजार में जरूर सुस्ती पसरनी शुरू हो गई है। हालाँकि ट्रंप ने माना कि कुछ बड़ी समस्याओं को दूर करने के लिए दवाएँ देनी पड़ती हैं। मगर अमेरिकी नागरिक महंगाई की मार को बहुत देर तक झेलने की स्थिति में नहीं हैं। जिन देशों पर पारस्परिक शुल्क लगाने की तिथि नब्बे दिनों के लिए टाल दी गई है, उनमें भी आधार शुल्क दस फीसद लागू है। इसी से

वहाँ महंगाई बढ़ गई है। अगर ट्रंप अपनी जिद पर अड़े रहते हैं और नब्बे दिन बाद पारस्परिक शुल्क लागू करते हैं, तो दूसरे देश भी वैसा करने को तैयार हैं। यहाँ तक कि यूरोपीय संघ भी उनके इस फैसले के विरोध में है और उसने अपने जवाबी शुल्क की तारीख नब्बे दिन के लिए टाल दी है। इस तरह ट्रंप को अपने ही सहयोगियों का कड़ा विरोध झेलना पड़ रहा है। ट्रंप की पारस्परिक शुल्क नीति से सबसे अधिक विश्व व्यापार संगठन की नीतियों का उल्लंघन हो रहा है। उचित ही उसने भी ट्रंप के इस कदम पर कड़ा एतराज जाहिर किया है। विश्व व्यापार संगठन का गठन ही इस इरादे से किया गया था कि दुनिया

भारत को विश्व गुरु बनाने में सांस्कृतिक संगठनों को निभानी होगी विशेष भूमिका

प्रहलाद सवानी
जैसे, भारतीय शास्त्रों में काम में संयम रखने की सलाह दी जाती है तथा अर्थ के अर्जन को बुरा नहीं माना गया है परंतु अर्थ का अर्जन केवल अपने स्वयं के हित के लिए करना एवं इसे समाज के हित में उपयोग नहीं करने को बुरा माना गया है। इसी प्रकार, दैनिक जीवन में किए जाने वाले कर्म भी यदि धर्म आधारित नहीं होंगे तो जिस उद्देश्य से यह मानव जीवन हमें प्राप्त हुए है, उस उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकेगी। परंतु, जैसे जैसे राज्यों का विस्तार होने लगा और राज्यों की जनसंख्या में वृद्धि होती गई तो उस राज्य में निवास कर रहे नागरिकों के कष्टों को दूर करने के लिए धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन भी आगे आने लगे एवं नागरिकों के कष्टों को दूर करने में अपनी भूमिका का निर्वहन करने लगे। समय के साथ साथ धनाढ्य वर्ग भी इस फावत कार्य में अपनी भूमिका निभाने लगा। फिर, और आगे के समय में एक नागरिक दूसरे नागरिक की परेशानी में एक दूसरे का साथ देने लगे। परिवार के सदस्यों के साथ पड़ोसी, मित्र एवं सहृदयी नागरिक भी इस प्रक्रिया में अपना हाथ बंटाने लगे। इस प्रकार प्राचीन भारत में ही व्यक्ति, परिवार, पड़ोस, ग्राम, नगर, प्रांत,



देश एवं पूरी धरा को ही एक दूसरे के सहयोगी के रूप में देखा जाने लगा। «वसुधैव कुटुम्बकम्», «सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय», «सर्वे भवन्तु सुखिनः» का भाव भी प्राचीन भारत में इसी प्रकार जागृत हुआ है। «व्यक्ति से समष्टि» की ओर, की भावना केवल और केवल भारत में ही पाई जाती है। वर्तमान काल में लगभग समस्त देशों में चुकि समस्त व्यवस्थाएं साम्यवाद एवं पूंजीवाद के नियमों पर आधारित हैं, जिनके अनुसार, व्यक्तिवाद पर विशेष ध्यान दिया जाता है और परिवार तथा समाज कहीं पीछे छूट जाता है। केवल मुझे कष्ट है तो दुनिया में कष्ट है अन्यथा किसी और नागरिक के कष्ट पर मेरा कोई ध्यान नहीं है। जैसे यूरोपीयन देश उनके ऊपर किसी भी प्रकार की समस्या आने पर पूरे विश्व का आग्रह करते हुए पाए जाते हैं कि जैसे उनकी समस्या पूरे विश्व की समस्या है परंतु जब इसी प्रकार की समस्या किसी अन्य देश पर आती है तो यूरोपीयन देश उसे अपनी समस्या नहीं मानते हैं।

यूरोपीयन देशों में पनप रही आतंकवाद की समस्या पूरे विश्व में आतंकवाद की समस्या मान ली जाती है। परंतु, भारत द्वारा श्रेणी जा रही आतंकवाद की समस्या यूरोप के लिए आतंकवाद नहीं है। यह पश्चिमी देशों के ड्रीमए में है कि विकास की राह पर केवल मैं ही आगे बढ़ूँ, जबकि भारतीयों के ड्रीमए में है कि सबको साथ लेकर ही विकास की राह पर आगे बढ़ूँ जाय। यह भावना भारत में विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठनों में भी कूट कूट कर भरी है। इसी तर्ज पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी कार्य करता हुआ दिखाई दे रहा है। संघ के लिए राष्ट्र प्रथम है, और भारत में निवास करने वाले हम समस्त नागरिक हिंदू हैं, क्योंकि भारत में निवासरत प्रत्येक नागरिक से समानता संस्कृति के संस्कारों के अनुपालन की अपेक्षा की जाती है। भले ही, हमारी पूजा पद्धति भिन्न भिन्न हो सकती है, परंतु संस्कार तो समान ही चलते चाहिए। इसी विचारधारा के चलते आज संघ देश के कोने कोने में पहुंचने में

सफल रहा है। संघ ने न केवल राष्ट्र को एकजुट करने का काम किया है, बल्कि प्राकृतिक आपदाओं के समय तथा उसके बाद राहत एवं पुनर्वास कार्य में भी अपनी सक्रिय भूमिका सफलतापूर्वक निभाई है। इस वर्ष संघ अपना शताब्दी वर्ष मनाते जा रहा है परंतु संघ इसे अपनी उपलब्धि बिल्कुल नहीं मानता है बल्कि संघ के लिए तो शताब्दी वर्ष भी जैसे स्थापना वर्ष है और उसी उत्साह से अपने कार्य को विस्तार तथा सुदृढ़ीकृत करते हुए आगे बढ़ने की बात कर रहा है। संघ का अपनी 100 वर्षों की स्थापना सम्बंधी उपलब्धि को उत्सव के रूप में मनाने का विचार नहीं है बल्कि इस उपलब्धि में संघ के स्वयंसेवकों से अपेक्षा की जा रही है कि वे आत्मचिंतन करें, संघ कार्य के लिए समाज द्वारा दिए गए समर्थन के लिए समाज को धन्यवाद दें और राष्ट्र के लिए समाज को संगठित करने के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करें। शताब्दी वर्ष में समस्त स्वयंसेवकों से अधिक सावधानी, गुणवत्ता एवं व्यापकता से कार्य करने का संकल्प लेने हेतु आग्रह किया जा रहा है। आज संघ कामना कर रहा है कि पूरे विश्व में निवास कर रहे प्राणी शांति के साथ अपना जीवन यापन करें एवं विश्व में लड़ाई झगड़े का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। अतः हिंदू सनातन संस्कृति का पूरा विश्व में फैलाव, इस धारा पर निवास कर रहे समस्त प्राणियों के हित में है। इस संदर्भ में आज हिंदू सनातन संस्कृति की किसी भी प्रकार का प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अब तो विकसित देशों द्वारा की जा रही रिसर्च में

शिक्षा का बढ़ता बाजारीकरण और सरकारी खामोशी...



पाठ्य सामग्री ऊँची कीमत पर खरीदने के लिए अभिभावकों पर परोक्ष, तो कहीं-कहीं प्रत्यक्ष दबाव बनाया जाता है। शिक्षा खुलेआम बेची जा रही है और वह भी ऊँचे दामों पर। अभिभावक मनचूरी में खरीद रहे हैं। बच्चों की शिक्षा के नाम पर ऊँचे दाम पर शिक्षा बिकती है, मोटी रकम वसूली जा रही होती है, ऐसे में संबंधित प्रदेश और देश की सरकार का दायित्व उसे संभालने का होना चाहिए। आए दिन ऐसी खबरें प्रमुखता से छपती हैं कि निजी स्कूल ऊँचे दामों की किताबें और मोटी रकम फीस के तौर पर अभिभावकों से मांग कर रहे हैं। वहाँ से शिक्षाविद इसकी मांग कर रहे हैं कि पाठ्यक्रम चाहे बच्चों का हो या ऊँची किताबों में एकरूपता होनी चाहिए। कहने का आशय यह है कि सरकारी स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम कुछ और हो, गैर सरकारी निजी स्कूलों के लिए कुछ और। जबकि इसमें एकरूपता परम आवश्यक है। पिछले दिनों मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने इस पर सख्ती दिखाई थी। शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू होने के बाद निजी विद्यालय द्वारा फीस वृद्धि नियंत्रित करने के लिए अनुसूचाएं करने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया था। तब राज्य सरकार द्वारा राजस्थान विद्यालय (फीस का विनियम) अधिनियम, 2016 एवं नियम 2017 निर्धारित कर लागू किए गए। इस अधिनियम में प्रत्येक विद्यालय में मातृ-पिता अध्यापक संमेलन की स्थापना करने और इस संमेलन को देखरेख में विद्यालय स्तरीय फीस समिति का गठन करने का प्रावधान किया गया है। हालाँकि निजी विद्यालय इस समिति के जरिए फीस वृद्धि करते हैं, लेकिन हासन और विभागीय अधिकारियों के स्तर से सूक्ष्म निगरानी और नियंत्रण नहीं होने के कारण इन समितियों के नाम पर विद्यालय द्वारा लीपापोती कर शुल्क वृद्धि कर लेने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। नियम और व्यवस्था के नाम पर महज लीपापोती न होकर आवश्यकता इस बात की है कि सरकार का प्रत्येक स्तर पर 'फ्रेंड फिलास्फर गाइड' यानी मित्र-दार्शनिक सिद्धांत के अनुसार विद्यालयों पर प्रभावी नियंत्रण हो। ऐसे वातावरण के निर्माण की आवश्यकता है, जिसमें विद्यालय शिक्षा का कार्य एक पुनीत, सामाजिक दायित्व और अपना स्वयं का कार्य मानकर पूर्ण प्रतिबद्धता तथा ईमानदारी के साथ निर्वहन करें। वर्तमान में, इस सिद्धांत के अनुसार काम कर रहे हैं, एक ही परीक्षा होती है और उसकी फीस भी सरकार निर्धारित करती है।

हर ऋतु, चाहे वह सुख हो या दुःख, केवल समय का एक हिस्सा है। जैसे गर्मी के मौसम में हम पंखा या एसी का उपयोग करते हैं, वैसे ही जीवन की कठिन परिस्थितियों में हमें अपनी आंतरिक शक्ति का सहारा लेना होता है। क्या आपने कभी अनुभव किया है कि जैसे मौसम बदलता है, वैसे ही मन भी बदलता रहता है? कभी सुख, कभी दुःख, कभी प्रेम, कभी घृणा, हमारे भीतर यह उतार-चढ़ाव अनवरत चलते रहते हैं। ये बदलाव बाहरी मौसम के समान हैं, जो समय के साथ होते रहते हैं। हम जिन स्थितियों में होते हैं, उनसे हमारा मन भी प्रभावित होता है। लेकिन, क्या होगा अगर हम उस चंचल मन को स्थिर कर सकें? क्या होगा अगर हम भीतर से इतना सशक्त हो सकें कि कोई भी बाहरी परिस्थिति हमें हिला न सके? इससे कुछ एक अद्भुत सिद्धांत है जिसे हम 'ऋतुचित' कहते हैं। ऋतुचित का अर्थ है, जब मानसिक अवस्था जहाँ मन बाहरी परिस्थितियों

के प्रभाव से मुक्त हो जाता है। जब मन स्थिर होता है, तब वह किसी भी ऋतु (मौसम) की तरह अप्रभावित रहता है। जैसे गर्मी, सर्दी, या बारिश अपने समय पर आती हैं, वैसे ही मन की अवस्थाएं आती हैं, लेकिन एक स्थिर और साधक व्यक्ति उनके बीच भी शांत और स्थिर रहता है। यह स्थिति केवल संतों की नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति इसे पा सकता है, अगर वह सही मार्ग का अनुसरण करे। जीवन की यात्रा में, हम अक्सर बाहरी मौसमों के बदलाव को सहजता से स्वीकार कर लेते हैं- गर्मी की तपिश, वर्षा की फुहारें, शरद की ठंडक। लेकिन, जब बात हमारे आंतरिक मनोभावों की आती है, तो हम उन पर नियंत्रण पाने की चेष्टा में संघर्षरत रहते हैं। क्या हो यदि हम अपने मन को भी ऋतुओं की भांति स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होने दें? यही विचार 'ऋतुचित' का है-एक ऐसा मन जो

परिस्थिति के अनुसार सहजता से ढलता है, बिना किसी प्रतिरोध के। कल्पना कीजिए, आप एक व्यस्त सड़क पर गाड़ी चला रहे हैं और अचानक कोई वाहन आपके सामने आ जाता है। स्वाभाविक प्रतिक्रिया हो सकती है क्रोध या झुंझलाहट। लेकिन, यदि आपका चित्त 'ऋतुचित' है, तो आप उस क्षण को एक परिवर्तनशील परिस्थिति के रूप में देखेंगे, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करते हुए शांत रहेंगे। यह न केवल आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है, बल्कि आपके निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित करता है। मनोविज्ञान के अनुसार, इमोशनल रेगुलेशन या भावनाओं का नियंत्रण, इस सिद्धांत से मेल खाता है। जब हम अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना सीखते हैं, तो हम अपने चित्त को स्थिर कर पाते हैं। यदि, किसी दिन हमारा मन उदास है, तो हम उस उदासी को पहचानते हैं,

लेकिन उसे अपनी पहचान नहीं बनने देते। हम जानते हैं कि यह सिर्फ एक ऋतु है, जो समय के साथ बदल जाएगी। इस तरह, हम अपने मन को बाहरी परिस्थितियों से अनावश्यक रूप से प्रभावित होने से बचाते हैं। भावनाओं में, श्रीकृष्ण अर्जुन को समत्व की शिक्षा देते हैं- 'समत्व योग उच्यते'- अर्थात्, समता ही योग है। यह समता बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन की ओर संकेत करती है, जहाँ मन सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय में समान रहता है। यह अवस्था प्राप्त करने के लिए मनोविज्ञान में 'इमोशनल रेगुलेशन' या 'भावनात्मक नियंत्रण' का उल्लेख मिलता है, जो हमें अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने और प्रबंधित करने की क्षमता प्रदान करता है। इसी प्रकार मनोविज्ञान में, 'कॉग्निटिव रीफ्रेमिंग' एक तकनीक है जिसमें हम किसी परिस्थिति को नए दृष्टिकोण से देखते हैं।

वक्फ संसोधन बिल रद्द करने के लिए मुर्शिदाबाद में हिंसा चुन-चुनकर जलाए हिंदुओं की दुकानें



सौम्य हिंदू धर्म के अनुसार अन्न और पानी को बर्बाद करना गंभीर अपराध माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7	सूक्त सूक्त: अन्न के दान करने वाले को बलिदान माना जाता है। अन्न को बर्बाद करने से पहले उसे पवित्र करने और उसे गरीबों को दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। सूक्त: 1-1-7
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

डॉ आंबेडकरजी का जीवन प्रेरणादायी रहा-सिसोदिया



मंदसौर, 14 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। डॉ. भीमराव अंबेडकरजी का जीवन प्रेरणादायी रहा है, उन्होंने शिक्षा के माध्यम से हर वर्ग को समानता का अधिकार दिया है। डॉ. भीमराव अंबेडकरजी के जीवन से हमें प्रेरणा लेना चाहिए। उपरोक्त विचार मध्य प्रदेश जनअभियान परिषद द्वारा आयोजित डॉ. भीमराव अंबेडकर जी जयंती पर पूर्व विधायक एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता यशपाल सिंह सिसोदिया ने उज्जैन विद्यालय मंदसौर में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किया।

श्री सिसोदिया ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में भी डॉक्टर अंबेडकर जी का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने हमेशा रुढ़िवादी गलत परंपराओं का विरोध किया है। सभी को समानता का अवसर दिया है। साथ ही उज्जैन विद्यालय की प्राचार्य विनीता प्रधान ने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर जी का जीवन काफी संघर्ष पूर्ण रहा है, हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। बाबा साहेब अम्बेडकर ने भारतीय संविधान निर्माण में अहम भूमिका निभाई और जीवनभर सामाजिक न्याय, समानता व अधिकारों के लिए संघर्ष किया। संगोष्ठी में मंच पर पूर्व विधायक यशपालसिंह सिसोदिया, उज्जैन विद्यालय के प्राचार्य विनीता प्रधान, वरिष्ठ अध्यापक बाबूलाल जोशी, मध्य प्रदेश जनअभियान परिषद जिला



नारायणगढ़, 14 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। संविधान निर्माता कुमठ, बाबू भाई मेव, कन्हैयालाल जी पाटीदार, दिलीपजी बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर जी की 134 वी जयंती के उपलक्ष्य में गांधी चौराहा नारायणगढ़ में माल्यादर्पण कर जन्म जयंती मनाई गई। कार्यक्रम को बाबू भाई मेव ने संबोधित कर बताया कि देश में वैमनस्यता फैलाकर हमारे अखंड संविधान को बदलने के लिए देश में तालाक प्रयासरत हैं। कार्यक्रम में श्री अजीत जी कोमट

मोहन सिंह एवं सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में यशपालसिंह सिसोदिया द्वारा जल कार्यक्रम में परमश्रद्धाता रघुवीरसिंह, संदीप शर्मा, सुशिरा, नवांकर संस्था के प्रतिनिधि दिनेश सौलंकी, मंजू भावसार

